International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

''सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन''

शरद कुमार शर्मा
शोधकर्ता, शिक्षा संकाय
बरकतउल्ला वि.वि., भोपाल

डॉ. असरारूल गनी
प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
एन.ई.एस. शिक्षा महाविद्यालय, होशंगाबाद

शोध पत्र का सार

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए एन.सी.एफ 2005 ने सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को शाला स्तर पर लागू करने की सिफारिश की। इसी परिप्रेक्ष्य में म.प्र. में भी निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत माध्यमिक शाला कक्षा 6 से 8 तक विद्यार्थियों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाना सुनिश्चित किया गया। ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति को ध्यान में रखते हुए इस शोध कार्य की परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। न्यादर्श के रूप में ग्राम सॉगाखेड़ा कलॉ होशंगाबादजिले के 30 शिक्षको (15 पुरूष एवं 15 महिला) का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया। शोध प्रदत्त संकलन हेतु डॉ. विशाल सूद एवं डॉ. श्रीमति आरती आनंद द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया गया। विभिन्न समूहों के बीच सार्थक अंतर की जॉच हेतु मध्यमान, मानक विचलन, ''टी'' परीक्षण का प्रयोग किया गया है। इस शोध के निष्कर्ष में यह पाया गया कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति ग्रामीण शिक्षकों को अभिवृत्ति ''औसत से अधिक'' है।

प्रस्तावना

गाँधीजी बालकों के सर्वांगीण विकास के पक्षधर थे। उनका मानना था कि विधार्थियों में शिक्षा द्वारा संयम, अनुशासन, चरित्र, विनय, समाजसेवा, देशप्रेम, स्वावलम्बन, सत्य, अहिंसा तथा सत्याचरण जैसे गुणों का विकास होना चाहिए। शिक्षा द्वारा इन गुणों के विकास होने पर बालक के व्यवहार में भी विकास होता है। अर्थात् शिक्षा का उद्देश्य शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करते हुए व्यवहार का विकास करना भी है बालक के व्यवहार में आए परिवर्तन को मापने के लिए शाला में मूल्यांकन कार्य किया जाता है। शिक्षा आयोग (1964–66) के अनुसार'' अपनी मूल योग्यताओं के निष्पत्ति स्तर को उन्नत करने तथा उचित आदतों एवं अभिवृत्तियों को विकसित करने में छात्रों की सहायता करना प्रारंभिक स्तर पर मूल्यांकन का एक मुख्य उद्देश्य है।'' शिक्षा आयोग (1964–66) ने ही मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। इससे छात्र की अध्ययन की

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

आदतों पर तथा अध्यापक की शिक्षण–पद्धति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।'' इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मूल्यांकन का वास्तविक लक्ष्य शिक्षा को उद्देश्य केंद्रित बनाना है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक सर्वांगीण विकास है। सर्वांगीण विकास का तात्पर्य बालक के व्यक्तित्व के सभी पक्षों यथा शारीरिक, मानसिक, गत्यात्मक एवं समाजिक आदि के विकास से है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए एन.सी.एफ 2005 ने सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को शाला स्तर पर लागू करने की सिफारिश की। म.प्र. में भी निःशुल्क एवं बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, 01 अप्रैल 2010 से लागू किया गया। इस अधिनियम के अनुसार शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 6 से 8 तक विद्यार्थियों का मूल्यांकन ''सतत एवं व्यापक मूल्यांकन'' द्वारा किया जाता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के तीन मुख्य पक्ष हैं– प्रक्रिया संबंधी, विधार्थी संबंधी और शिक्षक संबंधी। इन पक्षों के प्रति शिक्षक की जागरूकता सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को सार्थक बनाती है। शोधकर्ता द्वारा इस शोध कार्य में इन तीनों पक्षों को ध्यान में रखकर ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है।

शोध से संबंधित पूर्व अध्ययन

1. सोनावने, संजीव और इसावे, माधुरी (2012) ने सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया का अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय में वर्तमान मूल्यांकन पद्धति का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया कि विद्यालय में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन निर्धारित प्रारूप के अनुसार नही होता है। शिक्षकों के लिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन एक सिर दर्द वाली प्रक्रिया है। शिक्षकों के पास सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के रिकार्ड की कमी पाई गई।
2. जोशी, सुभाष परिजात (2013) ने प्राथमिक स्तर पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अध्ययन बुलधाना जिला (महाराष्ट्र) में किया। इस अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान मूल्यांकन पद्धति का अध्ययन करना तथा शिक्षकों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति दृष्टिकोण जॉचना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से पूर्णतः परिचित हैं परन्तु वे विधाथियों में सुधार की जगह तनाव पैदा कर देते हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष में यह भी पाया गया कि विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन किया जा रहा है परंतु बिलकुल वैसा नहीं किया जा रहा है जैसा कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा में निर्धारित किया गया है।
3. शर्मा, कुसुम (2013) ने सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति पुरूष एवं महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि पुरूष एवं महिला शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है। साथ ही शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति उच्च पाई गई।
4. एम., यदु कुमार और के. एस., किरन कुमार (2015) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति जागरूकता का अध्ययन तथा विद्यालय में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के क्रियान्वयन के लिए सुझाव प्राप्त करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि 36.11 प्रतिशत शिक्षक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति उच्च जागरूक है, जबकि 50 प्रतिशत शिक्षक औसत जागरूक है। कक्षा में विधाथियों की अधिक संख्या, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम की कमी, कार्य की अधिकता, विधार्थियों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति गंभीरता की कमी सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के क्रियान्वयन में बाधक है।

उद्देश्य

1. राज्य शिक्षा केन्द्र, म.प्र. द्वारा माध्यमिक शाला में लागू सतत एवं व्यापक मूल्यांकन केप्रति ग्रामीण शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. राज्य शिक्षा केन्द्र, म.प्र.द्वारा माध्यमिक शाला में लागू सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में विधार्थी/शिक्षक/प्रक्रिया संबंधी पक्ष पर ग्रामीण शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएँ

1. राज्य शिक्षा केन्द्र, म.प्र.द्वारा माध्यमिक शाला में लागू सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति ग्रामीण शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक होगी।
2. राज्य शिक्षा केन्द्र, म.प्र.द्वारा माध्यमिक शाला में लागू सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में विद्यार्थी/शिक्षक/प्रक्रिया संबंधी पक्ष में ग्रामीण पुरूष एवं महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध कार्य का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य होशंगाबाद जिले के सांगाखेड़ाकलॉ ग्राम में स्थित शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों तक सीमित है।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में म.प्र. के होशंगाबाद जिले में स्थित ग्राम सांगाखेड़ा कलॉ के शासकीय विद्यालयों (कक्षा 6 से 8 तक) में कार्यरत 30 शिक्षकों (15 पुरूष एवं 15 महिला) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु डॉ. विशाल सूद एवं डॉ. श्रीमति आरती आनन्द द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण''सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति'' का उपयोग किया गया है।

शोध विधि

सर्वप्रथम होशंगाबाद जिले के ग्राम सागखेड़ाकलॉ के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 30 शिक्षकों (15 पुरूष एवं महिला) का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। चयनित शिक्षकों पर ''सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति'' मापनी का प्रशासन किया गया एवं प्राप्ताकों के आधार पर मास्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण द्वारा आकड़ों का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिकल्पनाओं का पुष्टिकरण

परिकल्पना 1– राज्य शिक्षा केन्द म.प्र. द्वारा माध्यमिक शाला में लागू सतत एवं व्यापकमूल्यांकन के प्रति ग्रामीण शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक होगी।

तालिका क्रमांक– 1 पुरूष एवं महिलाशिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति संबंधी परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	Z–प्राप्तांक	वर्गीकरण
ग्रामीण पुरूष	15	183.80	+0.86	औसत से अधिक सहमत
ग्रामीण महिला	15	169.06	+0.95	औसत से अधिक सहमत

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण पुरूष शिक्षक एवं ग्रामीण महिला शिक्षक के मध्यमान क्रमशः 183.80 एवं 169.60 है, जिनके मानक प्राप्तांक (Z–स्कोर) क्रमशः 0.86 एवं 0.95 है जो औसत से अधिक सहमति को प्रदर्शित कर रहे हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है।

परिकल्पना 2–राज्य शिक्षा केन्द्र, म.प्र. द्वारा माध्यमिक शाला में लागू सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में विधार्थी/शिक्षक/प्रक्रिया संबंधी पक्ष में ग्रामीण पुरूष एवं महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका क्रमांक– 2 ग्रामीण पुरूष एवं महिला शिक्षकों के सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के विधार्थी/शिक्षक/प्रक्रिया संबंधी पक्ष के संदर्भ में तुलनात्मक परिणाम

पक्ष	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
विधार्थी संबंधी	पुरूष	15	87.93	9.45	2.46	< 0.05
	महिला	15	79.40	9.55		
शिक्षक संबंधी	पुरूष	15	49.13	5.49	2.28	<0.05
	महिला	15	44.93	4.53		
प्रक्रिया संबंधी	पुरूष	15	46.73	4.54	1.17	>0.05
	महिला	15	44.73	4.79		

स्वतंत्रता के अंश –28 0.05 स्तर पर सर्थकता पान–2.05

0.01 स्तर पर सर्थकता पान–2.76

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के विधार्थी संबंधी पक्ष में ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के मध्य सार्थक अंतर है क्योंकि इसके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.46 स्वतंत्रता के अंश 28 पर सार्थकता स्तर 0.05 के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 2.05 की अपेक्षा अधिक है।

अतः निष्कर्षत कहा जा सकता है कि ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के मध्य सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के विधार्थी संबंधी पक्ष में सार्थक अतंर पाया गया।

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के शिक्षक संबंधी पक्ष में ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के मध्य सार्थक अंतर है क्योंकि इसके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.28 स्वतंत्रता के अंश 28 पर सार्थकता स्तर 0.05 के लिए निर्धारित न्यूनतम पान 2.05 की अपेक्षा अधिक है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के मध्य सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के शिक्षक संबंधी पक्ष में सार्थक अतंर पाया गया।

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रक्रिया संबंधी पक्ष में ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के मध्य सार्थक अंतर नहीं हैं क्योंकि इसके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.17 स्वतंत्रता के अंश 28 पर सार्थकता स्तर 0.05 के लिए निर्धारित न्यूनतम पान 2.05 की अपेक्षा कम है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकताहै कि ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के मध्य सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रक्रिया संबंधी पक्ष में सार्थक अतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

इस शोधकार्य के निष्कर्ष में यह पाया गया कि

1. ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है। यह परिणाम शर्मा, कुसुम (2013) के शोध कार्य से मेल करता है जिसमें शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति उच्च पाई गई।

2. ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के विधार्थी संबंधी पक्ष में सार्थक अतंर पाया गया। स्पष्ट है कि ग्रामीण ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षक द्वारा विधार्थियों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकनसमान रूप से नहीं किया जा रहा है। जोशी, सुभाष परिजात (2013) द्वारा अपने शोध में भी यह पाया था कि शाला में विधार्थियों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा (2005) के अनुरूपनहीं किया जा रहा है।
3. ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के मध्य सतत एवं व्यापक मूल्यांकनके शिक्षक संबंधी पक्ष में सार्थक अंतर पाया गया।

स्पष्ट है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी रिकार्ड का साधारण करना, विधार्थियों के सर्वागीण विकास के लिए गतिविधि करवाना, व्यक्तिगत–समाजिक गुणों के विकास के लिए प्रोत्सहित करना, उपलब्धि स्तर में बढ़ोत्तरी करना आदि शिक्षकीय कार्य ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों द्वारा समान रूप से नहीं किये जा रहे हैं।

सोनावरे, संजीव और इसावे, माधुरी (2012) ने भी अपने शोध कार्य में यह पाया था कि विद्यालय में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन निर्धारित प्रारूप अनुसार नहीं होता है। शिक्षकों के पास सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के रिकार्ड की कभी पाई गई थी।

4. ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के मध्य सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रक्रिया संबंधी पक्ष में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

स्पष्ट है कि ग्रामीण शिक्षको ने सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को समान रूप से आत्मसाध कर लिया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया को ग्रामीण पुरूष एवं ग्रामीण महिला शिक्षक ठीक तरह से समझ चुके है।

शैक्षिक निहितार्थ–इस शोध के अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है। पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य प्रक्रिया संबंधी पक्ष में सार्थक अंतर नही है किंतु विधार्थी संबंधी एवं शिक्षक संबंधी पक्ष में सार्थक अतंर पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के पूर्ण रूप से समझ गए है, किन्तु इस हेतु राष्ट्रीय पाठ्य चर्चा (2005) के अनुसार सुझाई गई प्रक्रिया का पालन नहीं कर रहे हैं। शाला में बौद्धिक विकास, व्यक्तिगत सामजिक गुणों के विकास, खेल, रचनात्मकता, वैज्ञानिकता, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधि आदि का आयोजन नही किया जा रहा है और नही इस हेतु विधिवत रिकार्ड का संधारण किया गया है। अतः इस हेतु शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए एवं रिकार्ड संधारण एवं गतिविधि के आयोजन हेतु मार्ग दर्शन दिया जाना चाहिए। विकासखण्ड एवं जिला स्तर पर निरीक्षण दल का गठन कर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी निरीक्षण समय–समय पर किया जाना चाहिए।

सदंर्भ

1. अस्थाना, विपिन (1999), ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. भटनागर, आर.पी. (1995), '' शिक्षा अनुसधान विधि एवं विश्लेषण'' ईगल बुक्स इंटरनेशनल, मेरठ।
3. प्रशिक्षण मॉड्यूल (2011), ''सामर्थ्य'', मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा (2005), एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली।
5. सोनी, रामगोपाल (2014), ''उद्योन्मुख समाज में शिक्षक'', एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
6. शर्मा, आर. ए. (1993), ''मापन एवं मूल्यांकन'' ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, बी.सी बाजार, मेरठ।
7. Joshi, Subhash Partjat (2013), "Study of Continuous comprehensive Evaluation Scheme at Elementy School from Buldhana District, Maharashtra (India)", International Educational E-Journal, Apr-May-June 2013, Volume - II, Issue-II.

8. M., Yadu Kumar and K.S., Kiran (2015)," A Study on Awareness of CCE Among Secondary School Teachers", SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES, MAR-APR, 2015, VOL III/XVIII Page No 3114-3119.
9. Sharma, Kusam (2013) "Attitude of Teachers Towards Continous Comprehensive Evaluation (CCE)", SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES, JULY-AUGUST, 2013, VOL I, Issue- I, Page No 1570-1585.
10. Sonawane, Sanjeev and Isave, Madhuri (2012), "Study the Continuous Comprehensive Evaluation Scheme at Secondary School", International Educational E-Journal, Jan-Feb-Mar 2012, Volume I, Issue II, Page No, 1-6